दिनांक :- 24-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- बारह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की प्रगति (1900-1930) ई०

अनेक कारणों से ईसाई धर्म की भी कड़ी आलोचना की जाने लगी। राष्ट्रवादियों ने इस विदेशी प्रभाव कहा। धर्म प्रचारकों को विदेशों से धन मिलता है तथा उन पर विदेशियों का ही नियंत्रण था। इसलिए ईसाई धर्म को विदेशी धर्म समझा जाता था। मिशन स्कूल में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी। 1923 ई० के बाद इस पर कड़ा

प्रहार किया जाने लगा। चीनी राष्ट्रवाद ईसाई संप्रदाय को कबूल करने के लिए तैयार न था। चीनी ईसाई एक स्वतंत्र चीनी चर्च की स्थापना चाहने लगे। इसके लिए आंदोलन भी चल पड़ा प्रोटेस्टेंट धर्म प्रचारक धर्म प्रचार के सारे काम देशी चर्च को देना चाहते थे। चीन में ईसाइयत का राष्ट्रीकरण हो गया। 1922 ई० में एक आयोग ने चीन में ईसाई शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया। आयोग में चीनी सदस्य भी थे। इसने अपनी रिपोर्ट में शिक्षा में सुधार लाने बारे में बताया।

बुद्धिजीवी ईसाई धर्म पर एक दूसरी तरह से भी प्रहार कर रहे थे। वे ईसाई धर्म के सामाजिक संदेश पर बल देते थे जिसमें सेवा की भावना निहित थी। इसके तहत परोपकारी या लोक कल्याणकारी कार्यक्रम थे। बाइबिल की उदारवादी व्याख्या की गई। किंतु कट्टरपंथियों का तर्क था कि चर्च का प्रधान उद्देश्य या मुख्य भाग व्यक्तिगत मोक्ष है। इस पर चीनी ईसाइयों ने अलग राष्ट्रीय चर्च की मांग की।

Scanned with CamScanner

(ज) कला :- 1931 ई० तक चीनी कला में भी पश्चिमी प्रभाव दिखाई देने लगा था। प्राचीन काल में चीन ने चित्रकला में बड़ी प्रगति की थी। अनेक कलाकृतियों में प्रकृति या प्रकृति के साथ मानव को जोड़ा गया था। कुछ में बौद्ध एवं ताओ धर्मों का प्रभाव था। इसने भावना और लय का बड़ा ललित समन्वय प्रदर्शित किया गया है। चीनी कला में प्रतीकवाद का भी चित्रण है। चित्रों को अमूक कविता माना जाता था किंतु पश्चिमी कला के प्रभाव में इसने अपनी मौलिकता को खो दिया। स्थापत्य कला के साथ भी यही बात थी। पुरानी शैली में भवन गले से आकर्षणहीन थे लेकिन वे प्रधानता चीनी थी। इमारतों की छत पर काफी सजावट की जाती थी। पश्चिमी शैली पर निर्मित भवन हल्के और आकर्षक तो अवश्य थे लेकिन मजबूती नहीं थी।

(ङ) मनोरंजन और नाट्य गृह।

चीन में मनोरंजन और नाट्य गृह पश्चिमी विचारों से बड़े प्रभावित हुए। चीन का नाट्य गृह बिल्कुल एलिजाबेथ कालीन इंगलैंड (1558-1603) ई० की तरह था। यह खुला रंगमंच था जिसमें कोई पर्दा नहीं था। अभिनेता को देखते थे। गंभीर ढंग के नाटक, प्रायः ऐतिहासिक नाटकों का मंचन होता था। अनेक तरह के ढोंग रचे जाते थे। भ्रम पैदा करने का पूरा दायित्व अभिनेता के साथ था। कुछ पेशेवर रंगमंच भी होते थे जहाँ अभिनय बड़े सुन्दर ढंग का होता था। अभिनेता को मंच पर उतरने के पहले अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाता था। चीनी नाटकों पर पश्चिमी का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। इसकी विषय वस्तु बदल गई तथा पेश करने का तरीका बदल गया। विदेशों में शिक्षित छात्र पश्चिमी नाटक साहित्य में काफी दिलचस्पी लेते थे। चीन के

मध्य विद्यालयों तथा विद्यालियों में नाटक लिखे जाने लगे और उनका अभिनय किया जाने लगा। इनमें कुछ नाटक तो बड़े अच्छे होते थे। चीन के विदेशी बंदरगाहों में चलचित्र दिखाई जाने लगी। यह बिल्कुल पश्चिमी शैली की देन थी। यह मनोरंजन का प्रिय साधन बन गया। युवाजन ईसाई संघ (Y.M.C.A) इसे पेश करने लगा। चलचित्र की विषयवस्तु आंशिक तौर से पश्चिमी थी। पश्चिमी विचारों को तोड़-फोड़ कर पेश किया जाता था तथा यौन संबंधों का अश्लील प्रदर्शन किया जाता था। 1920 ई० के बाद चीनी कंपनियाँ भी चलचित्र बनाने लगी। वृत्तचित्र शैक्षिक चित्र भी बनाए जाने लगे। अब पश्चिमी सभ्यता ही भौतिकवादी संस्कृति को पैदा करने का अवसर मिल गया। चीनी पश्चिमी मनोरंजन के साधनों में अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगे। स्कूलों में खेल कूद का आयोजन

होने लगा। 1970 ई० के बाद टेनिस, बास्केट बाल, सोकर आदि खेले जाने लगे। युवा जनईसाई संघ ने खेल-कूद को प्रोत्साहन दिया। स्थानीय, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर खेल-कूद का आयोजन किया जाने लगा। देश में अच्छे-अच्छे खिलाड़ी निकल आए। वे सुदूरवर्ती ओलम्पिक खेल कूदो में जापानी तथा फिलिपिनी खिलाड़ियों का सफलता पूर्वक सामना करने लगे। 1930 ई० तक चीनी छात्र शारीरिक स्वस्थ के महत्व को समझने लगे। वे शरीर तथा मस्तिष्क के विकास पर जोर देने लगे। शरीर को स्वास्थ रखने के लिए स्वास्थ सफाई पर भी बल दिया जाने लगा। चीन के जीवन स्तर व जीवन दशाओं में कायाकल्प हो गया। किन्तु चीन में कन्फ्यूशिस संप्रदाय के विद्वान भी थे। उन्हें खेल-कूद से कोई मतलब नहीं था। वे अध्ययन में लगे रहते थे तथा सुबह शाम धीमी गति से चिंतन मुद्रा में टहल लेते थे।

Scanned with CamScanner

स्वास्थ्य सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया। आधुनिक चिकित्सा ज्ञान एवं आयुर्विज्ञान शिक्षा ने इसे प्रोत्साहन दिया। आयुर्विज्ञान के आधुनिकीकरण में पश्चिमी का प्रभाव स्पष्ट था। इसने महामारियों की रोकथाम तथा रोगों के उपचार में मदद मिली।

यह कटु सत्य है कि 1911 ई० की राजनीतिक तथा तदनन्तर सांस्कृतिक क्रांति ने आम चीनी जनता को बहुत कम प्रभावित किया। केवल समाज के उच्च वर्ग के लोग या संधि-बंदरगाहों या इनके समीपवर्ती इलाकों में रहने वाले लोग ही लाभान्वित हुए। आम लोगों के जीवन-स्तर में कोई आशाजनक परिवर्तन नहीं हुआ। बेकारी, निरक्षरता गहराई का साम्राज्य बना रहा। किंतु छात्र आन्दोलन ने जन-जीवन को बड़ा प्रभावित किया। जब कभी छात्र सड़कों पर उतरे जनता ने उनका साथ दिया।

Scanned with CamScanner